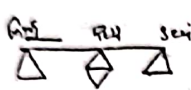


(2) वर्षा → वर्ष में महासागरीय प्रदेशों जहाँ वर्षों अधिक होते हैं वहाँ अच्छे जल की अधिक आपूर्ति के कारण अधिक वर्षा के कारण वाष्प भी लक्षण की मात्रा कम होती है। विषुवत रेखा के 5° उच्च और 5° उ. अक्षांश तप का क्षेत्र है जिसके लिए अधिक वाष्पीकरण और लक्षण की संभावना है लेकिन जलवायविक दृष्टि से लक्षण की मात्रा कम लगता है।

(3) नदियों द्वारा अच्छे जल की आपूर्ति → नदियों द्वारा समुद्र में अच्छे जल लाये जाते हैं। परिणामतः नदी नदियों के मुहाने क्षेत्र में लक्षण की मात्रा कम होती है, जो खाली या प्रवाहित और बड़ी मात्रा में जल लाते हैं। पुनः कई छोटी-छोटी नदियाँ भी यदि एक साथ समुद्र में मिलती हैं तो जल में लक्षण की मात्रा कम हो जाती है। कुछ-की छोटी-बड़ी नदियों के कारण ही काला सागर में कैस्पियन सागर की तुलना में लक्षण की मात्रा कम होती है।



(4) वायुमंडलीय दाब और वायुद्वारा → वायुमंडलीय दाब और वायुद्वारा लक्षण को प्रभावित करती है। उच्च दाब के क्षेत्र में अधिक के अनुसार लक्षण की मात्रा बढ़ती जाती है, परंतु ऊपरी भाग में लक्षण की मात्रा कम हो सकती है, क्योंकि उच्च दाब क्षेत्र की ओर निम्न दाब क्षेत्र से कम लक्षण युक्त जल की आपूर्ति भी होती है। वायुद्वारा से भी लक्षण प्रभावित होती है। प्रचलित वायु की दिशा में समुद्री जल गतिशील हो जाते हैं। परिणामतः गर्म प्रदेशों के लक्षण उच्च प्रदेशों में भी पहुँच जाते हैं। गर्मी के तब पर उच्च अक्षांशिक गर्म जलधारा के कारण लक्षण की मात्रा 20% कम है, जो आसपास की तुलना के क्षेत्रों की तुलना में अधिक है।

(5) समुद्री जल की गतिशीलता → सामान्यतः निल अक्षांशीय जलधारा उच्च अक्षांश की ओर जाती है तो लक्षण की मात्रा में वृद्धि करती है, जबकि कैनाडी और मैसीजोविया जलधारा उच्च अक्षांश से निल अक्षांश की ओर जाने पर लक्षण की मात्रा कम कर देती है।

(6) हिम शिला षंडों का पिघलना → हिमशिता षंडों के पिघलने से अच्छे जल की आपूर्ति होती है जिससे लक्षण की मात्रा बढ़ती है। दोनों गोलार्धों के उच्च अक्षांशीय क्षेत्रों में कम लक्षण की मात्रा होती है।

महासागरों में जल का औसत लवणता 35% है।
 'अटलांटिक में' यह औसत 37.6% प्रशांत में 36.3% है।
 -हिन्द महासागर में 34% है।

अंककल तब ही बसुदी तल के किल्ल में
 विद्यमान है जैसे - किपुवै उष्ण क्षेत्र में आर्कटिक क्षेत्र की तुलना
 में लवण की संपन्नता कम होती है, मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों में 200
 मीटर की गहराई तक लवणता की मात्रा में (बहु) होती है जो
 इसके बाद लवणता कम होने लगती है। उच्च अक्षांशीय क्षेत्रों में
 गहराई से साथ-साथ लवणता की मात्रा बढ़ती जाती है।

